नाम : डॉ लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

महाविद्यालय का नाम : दुर्गा महाविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़

संकाय : कला

विषय : **भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद की जरूरत**

दिनांक : 01/03/2024

प्रस्तावना –

भारत एक बहुभाषी देश है। इन भाषाओं में परस्पर आदान–प्रदान शताब्दियों से हो रहा है। इन भाषाओं और संस्कृतियों के बीच अनुवाद संवाद सेतु के रूप में कार्य कर रहा है। वास्तव में शताब्दियों के सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया के चलते देश में सांस्कृतिक एकीकरण में दृढ़ता आई है। देश में विभिन्न भाषाओं, आचार–विचारों और मत–मतांतरों के होने के बावजूद हमारी अखंडता और एकता पर कोई आँच नहीं आई। विविध भाषा–परिवारों की भाषाओं को बोलने वालों में परस्पर सद्भाव बनाए रखने में अनुवाद का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आज भी अनुवाद एक सामाजिक आवश्यकता है।

भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के विकास में अनुवाद का विशेष महत्व रहा है। अनुवाद के माध्यम से भारतीय भाषाओं में किए जा रहे कार्यों का परिचय मिलता है। उनमें निहित साहित्यिक सौंदर्य का रसास्वादन होता है। वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसीदास कबीर, तिरुवल्लुवर, कंबन, सुब्रह्मण्यम भारती, वेमना, पोतन्ना, संत बसवेश्वर, कुवेंपु एषुत्च्छन, उल्लूर परमेश्वरय्यर, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरतचंद्र भाई वीर सिंह ज्ञान देव, नामदेव आदि अनेक भाषाओं

के कवि और साहित्यकार भारतीय साहित्य के ज्ञानदीप हैं। इसके अतिरिक्त अनुवाद एक ऐसी विधा है, जिसका उपयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होता है। सर्जनात्मक साहित्य के साथ–साथ प्रशासन, बैंकिंग, पर्यटन, विज्ञापन, बाजार, विज्ञान प्रौद्योगिकी आदि विभिन्न कार्यक्षेत्रों में अनुवाद का कार्य असीम मात्रा में उपलब्ध है। इसलिए अनुवाद की आवश्यकता और महत्ता आज भी बनी हुई है।

भारत की भाषाएँ –

पिछली इकाइयों में आपने देख है कि भारत एक बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय देश है। 1971 जनगणना के अनुसार भारत में 1652 मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से 33 भाषाएँ प्रमुख मानी गई हैं। इन 33 प्रमुख भाषाओं में संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ उल्लिखित हैं– असमिया, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगु, नेपाली, पंजाबी, बांग्ला, बोडो, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिंधी, हिंदी, उर्दू। ये सभी भाषाएँ विभिन्न भाषा–परिवारों अर्थात् भारत आर्य परिवार द्रविड़ परिवार ऑस्ट्रिक एशियाई परिवार चीनी–तिब्बती परिवार के अंर्तगत आती हैं। ये भाषा परिवार एक–दूसरे से संबद्ध और असंबद्ध होते हुए भारत के भाषायी चित्र को पूरा करते हैं।

इन विभिन्न भाषा–परिवारों की भाषाओं को बोलने वालों में परस्पर समरसता रही है। एक भाषा–भाषी समुदाय ने दूसरे भाषा–भाषी समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक विकास में साथ दिया और आवश्यकता के अनुसार उसकी भाषा को सीखता रहा, अपनाता रहा और उसमें प्रवीणता प्राप्त कर उस भाषा के साहित्य के विकास में सक्रिय सहयोग भी देता रहा। इस प्रकार शताब्दियों के सामाजिक–सांस्कृतिक 'समन्वय की प्रक्रिया में भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता सुदृढ़ हो गई।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इतनी मातृभाषाओं के बावजूद देश की संप्रेषण व्यवस्था में कहीं कोई कठिनाई या बाधा दिखाई नहीं देती। इन भाषाओं में

सातत्य मिलता है। इसी सातत्य के कारण कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से असम तक भाषाओं में कहीं भी टूटन नहीं मिलती। इसीलिए भारत में. बहुभाषिकता किसी विशेष समस्या के रूप में न उभर कर सामाजिक आवश्यकता के अनुरूप सहज और प्राकृतिक लक्षण के रूप में उद्दत हुई है। भारत की यह बहुभाषिकता न केवल राष्ट्रीय स्तर पर मिलती है, वरन विभिन्न प्रदेश भी बहुभाषी हैं। भारत की यह बहुभाषिकता प्राचीन काल से निरंतर चली आ रही हैं।

अनुवाद की आवश्यकता –

भारत की इस बहुभाषिकता में अनुवाद की बहुत बड़ी भूमिका रही है। यह भूमिका अनुवाद आज नहीं, सदियों से निभा रहा है। आठवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने केरल के कोच्चि नगर से चालीस किलोमीटर दूर कालड़ी कस्बे में जन्म लिया था और वे मलयाली भाषी थे। उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए भारत के पूर्व में जगन्नाथ पुरी, पश्चिम में द्वारका, उत्तर के बद्रीनाथ और दक्षिण के शृंगेरी में.. चार मठ स्थापित किए थे। 13वीं 14वीं शताब्दी में तमिल भाषी रामानुजाचार्य ने वाराणसी में आकर भक्ति आंदोलन चलाया, तेलुगु भाषी वल्लभाचार्य, कन्नड़ भाषी मध्वाचार्य और मलयालम भाषी निंबार्काचार्य ने वृन्दावन में रहकर कृष्ण और राधा संप्रदाय की अलख जगाई। इन सभी आचार्यों ने संस्कृत और अपनी–अपनी भाषाओं में जो ज्ञान प्राप्त किया, उत्तर भारत में उसे तत्कालीन संपर्क भाषा संस्कृत अथवा हिंदी में प्रसारित किया। अतः भारत की यह नियति है कि बहुभाषी होने के नाते इसने अनुवाद की परंपरा को बनाए रखा। इस कारण भारतीय भाषाओं में लगातार होते रहे अनुवादों के कारण इन भाषाओं की व्याकरणिक संरचना और सांस्कृतिक संरचना में काफी समानता मिलती है।

आधुनिक युग में अनुवाद मानव जीवन के अनेक ऐसे क्षेत्रों में प्रवेश कर चुका है जो हमारे दैनंदिन कार्यों के लिए आवश्यक है। इन प्रयोजनों से अनुवाद के क्षेत्र में नई संभावनाएँ पैदा हुई हैं, जिनसे अनुवादकों की माँग में बढ़ोतरी हुई है। भारत में प्रशासन, शिक्षा, व्यापार–वाणिज्य बैंकिंग, जनसंचार प्रौद्योगिकी आदि

कार्यक्षेत्रों में भारतीय भाषाओं का प्रयोग होता है, इसलिए इन कार्यक्षेत्रों में द्विभाषिकता की स्थिति बनी हुई है।

"वस्तुतः भारतीय भाषाओं के बीच आदान–प्रदान के अभाव और अनुवाद प्रक्रिया की कमी के कारण भारत की अनेक भाषाएँ और उनकी संपदा एक–दूसरे से काफी असंपृक्त बनी हुई हैं। इससे विभिन्न भाषी राज्यों के निवासी एक–दूसरे के साहित्य, संस्कृति, कला, वैज्ञानिक प्रगति आदि के संबंध में प्रायः अपरिचित ही हैं। इसीलिए भारतीय भाषाओं में संरचनात्मक तथा सांस्कृतिक समानता होते हुए तथा एक–दूसरे के निकट होते हुए भी वे अलग–अलग सी लगती हैं। इन भाषाओं के आदान–प्रदान की समस्या का समाधान मुख्यतः अनुवाद से ही संभव है। इससे हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की संपदा एक–दूसरे के पास पहुँचेगी। यह महान कार्य भारतीय भाषाओं के बीच सुनियोजित ढंग से अनुवाद कार्य करने से ही संपन्न हो सकता है।

भारतीय भाषाओं की अनुवाद प्रक्रिया में छोटी–छोटी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, क्योंकि विविध लिपियों में लिखें होने के कारण कई शब्दों को समझने में कठिनाई होती है, हालांकि इन भाषाओं में प्रयुक्त शब्दावलियों में स्वभाषी अर्थात देशज शब्दों को छोड़ कर ज्यादातर शब्दों में समानता मिलती है। संस्कृत, अरबी, फारसी तथा यूरोपीय भाषाओं के तत्सम और तद्भव शब्दों में कुछ शब्दों के अर्थ–विपर्यय को छोड़ कर तथा तद्भव रूप–भेद को छोड़कर सभी भाषाओं में काफी समानता मिलती है। इसी प्रकार अनेक शब्द ऐसे हैं जो एक से अधिक भाषाओं में एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक समानता के कारण भारतीय भाषाओं के मुहावरों, लोकोक्तियों, मिथकीय कथनों और प्रयोग में भी काफी समानता मिलती है। इसलिए भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद की अनेक समस्याओं के बावजूद कई सुविधाएँ भी हैं।

भारतीय भाषाओं के बीच साहित्यिक परंपरा और अनुवाद परंपरा के परिप्रेक्ष्य में भावनात्मक एकता और राष्ट्रीय अखंडता को सुदृढ़ आधार मिला है। अनुवाद के

माध्यम से इन भाषाओं के बीच आदान–प्रदान की प्रक्रिया चलती रही है और इन भाषाओं ने एक–दूसरे से शब्द लेने में भी संकोच नहीं किया। इस प्रकार अनुवाद ही एक ऐसा विकल्प है जो विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य, विज्ञान, तकनीकी आदि को सर्वसुलभ और सार्वजनिक बनाने में सहायता करता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में एकता और अखंडता को सुरक्षित और सुदृढ़ बनाए रखने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है।

अनुवाद का महत्व –

विश्व संस्कृति में अनुवादः विश्व की सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में अनुवाद की विशेष भूमिका रही है। विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों को जानने तथा समझने के लिए अनुवाद को माध्यम बनाना हमारी नियति रही है। यूनान, मिस्र, चीन आदि प्राचीन सभ्यताओं से भारत का घनिष्ठ संबंध रहा है और इस संबंध में अनुवाद की विशेष महत्ता रही है। बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार समूचे एशिया में अनुवाद की जीवंत परंपरा का परिणाम है। विश्व भर में गीता तथा उपनिषद् के ज्ञान का अनुवाद अपने ढंग से किया जाता रहा है। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारतीय ग्रंथों का अनुवाद चीनी भाषा में हुआ। पंचतंत्र के लघु संग्रहों का अनुवाद अरबी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं में हुआ। इससे साहित्य और कला की विश्व चेतना का विकास हुआ। इस प्रकार अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रों की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक निधियों का आदान–प्रदान होता है। अनुवाद के द्वारा यह जानकारी मिल जाती है कि किन–किन देशों में कैसा साहित्य–सृजन हो रहा है और वह अन्य देशों से कितना समान और विषम है।

विश्व साहित्य और अनुवादः साहित्य के अनुवाद का इतिहास काफी प्राचीन है। अनुवाद ने न केवल विभिन्न साहित्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि भाषा के विकास में भी इसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। विश्व के विभिन्न साहित्यों के बीच जो परस्पर आदान–प्रदान हुआ, वह अधिकतर

अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है। इससे विभिन्न भाषाओं के साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन करने में काफी सहायता मिली है। इससे मानवीय ज्ञान के विविध संदर्भों, संकल्पनाओं, सिद्धांतों आदि की जानकारी मिलती है। इसके माध्यम से अन्य भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करने से जिन नई अभिव्यक्तियों, संवेदनाओं, विचारधाराओं, जीवनानुभूतियों और साहित्य– शैलियों का परिचय मिलता है, वे हमारे जीवन के साथ–साथ हमारी चिंतन शक्ति और साहित्य सर्जना को भी प्रभावित है। भारत जैसे बहुभाषी देश में तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन और उसमें निहित अनुवाद की भूमिका प्रासंगिक है। विभिन्न भाषाओं में रचित भारतीय साहित्य के इतिहास की सार्वभौमिकता को देखने के लिए अनुवाद का आश्रय लेना आवश्यक हो जाता है।

यूरोप में अनुवाद और उभरते हुए राष्ट्रवाद के बीच संबंधों का अध्ययन संस्कृति विषयक विभिन्न संकल्पनाओं के महत्व पर प्रकाश डाल सकता है। जिस रेनेसा काल में (पुनर्जागरण काल में) क्लासिक ग्रीक तथा रोमन साहित्य का अनुवाद हो रहा था, उसी काल में अंग्रेजी और जर्मन रोमांटिक अनुवादों की भाष्यपरक दृष्टि सामाजिक परिस्थितियों और संदर्भों के अनुकूल थी। यह दृष्टि व्यक्ति की भूमिका के बदलते हुए प्रयासों से भी जुड़ी हुई थी। पश्चिम में अनुवाद परंपरा का अध्ययन पश्चिमी साहित्य और संस्कृति के इतिहास को जानने तथा समझने के लिए अनिवार्य दिखाई देता था। इसके अतिरिक्त लैटिन साहित्य में अनुवाद की व्यापक भूमिका रही है, जिसने लैटिन साहित्य और भाषा को काफी उच्च स्तर पर पहुँचा दिया है।

ज्ञान–विज्ञान और अनुवादः विश्व भर में ज्ञान–विज्ञान की चेतना से मानवीय ज्ञानात्मक और भावनात्मक संवेदना को अनुवाद ..... अनुवाद से मिलने वाले ज्ञान ने मनुष्य के समाजशास्त्र को एक देश की सीमा से निकाल ..... तक पहुँचाया है। संस्कृत और यूनानी साहित्य, कला और दर्शन के प्रसार–प्रसार का श्रेय अनुवाद को ही जाता है। आधुनिक नवजागरणकाल में

पश्चिम के नए ज्ञान–विज्ञान से हमारे ज्ञान और चेतना के विकास में अनुवाद ही संबल रहा है। अनुवाद का महत्वपूर्ण योगदान ज्ञान– विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मिलता है। ज्ञान के संचार और संरक्षण में यह एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभरा है। विश्व के सभी विकसित देशों की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीपरक प्रगति में अनुवाद की उल्लेखनीय भूमिका रही है। आज विज्ञान के तेजी से बदलते हुए विश्व में प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कृषि आदि के क्षेत्रों में हो रहे नए–नए आविष्कारों और अनुसंधानों से जुड़े रहने के लिए अनुवाद सबसे बड़ा साधन है। न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत, डार्विन के विकासवाद, फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद और कार्ल मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की जानकारी अनुवाद से ही प्राप्त हुई है और इससे समूचा विश्व प्रभावित हुआ। रूसी, जर्मन, फ्रांसीसी, अंग्रेजी आदि विभिन्न भाषाओं से विज्ञान, कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी का विश्व भर में प्रचार–प्रसार हुआ। इस परमाणु शक्ति के युग में प्रत्येक शक्तिशाली राष्ट्र अन्य राष्ट्रों की सामरिक गतिविधियों पर पूरी–पूरी निगरानी रख सकता है और इस स्थिति में अनुवाद का महत्व बढ़ जाता है। वास्तव में विश्व की कम होती दूरियों में अनुवाद की उपयोगिता, प्रासंगिकता और महत्व में वृद्धि हो रही है।

वाणिज्य व्यापार और अनुवादः प्राचीन काल से ही अनुवाद देश–विदेश में वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी रहा है। प्राचीन काल से ही भारत, अरब, चीन, यूरोप में व्यापारी लोग अपने व्यापार के लिए देश– विदेश जाया करते थे और अनुवाद के सहारे ही अपना व्यापार और वाणिज्य करते थे। आज भी व्यापारी अपने उत्पादों और वस्तुओं की गुणवत्ता और उनके क्रय–विक्रय के संवर्धन के लिए अनुवाद का ही सहारा लेते हैं। इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उत्पादों और माल को खपाने की प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने के लिए भी अनुवाद का महत्व बढ़ जाता है। साथ ही उत्पादन के विज्ञापनों में अनुवाद की अनिवार्यता सदा से रही है।

धर्म प्रचार और अनुवादः अनुवाद ने ईसाई मत के प्रचार–प्रसार में भी विशेष भूमिका अदा की है। जब किसी धर्म या मत के अनुयायी अपने मत अथवा मजहब का प्रचार करना चाहते होंगे तो उन्होंने अनुवाद की आवश्यकता अवश्य महसूस की होगी। 'न्यू टेस्टामेंट' का अनुवाद पहले से ही प्रारंभ हो गया था और इसी के माध्यम से बाइबिल जनसामान्य तक पहुँच पाया था। विकिल्फ़ टिंदेल, मार्टिन लूथर आदि तत्कालीन अनुवादकों ने अनुवाद के द्वारा बाइबिल को धार्मिक रुढ़ियों से मुक्त कराया। वास्तव में इस काल में अनुवाद ने सक्रिय और क्रांतिकारी योगदान किया। बौद्ध मत को मुख्य धर्म के रूप में स्थापित करने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक (272–273 ई.पू.) ने अपनी राज्य सीमा से बाहर बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रचार में काफी कार्य किया था। अफगानिस्तान से मिस्र, सीरिया, मकदूनिया, फारस, चीन, जापान, श्रीलंका आदि अनेक देशों में अपने दूत भेजे थे। बौद्ध संतों ने बौद्ध धर्म ग्रंथों का अनेक भाषाओं में अनुवाद किया, जिससे बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ। इस प्रकार कई युगों से अनुवाद ने धर्म और संस्कृति के प्रचार–प्रसार में विशेष योगदान किया है।

भारतीय साहित्य और अनुवादः भारत में भी अनुवाद की परंपरा प्रचीन काल से चली आई है। मध्यकाल में संतों ने संस्कृत और पालि के साहित्य, दर्शन, धर्म और नीति ग्रंथों का अपनी भाषा में अनुवाद कर जनजागरण किया। वैद्यक, ज्योतिष, व्याकरण आदि ग्रंथों का अनुवाद कर हिंदी का भी विकास किया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक ओर भारतीय प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद कार्य तीव्र गति से होने लगा तो दूसरी ओर भारतेंदु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद, हरिवंश राय बच्चन आदि साहित्यकारों ने अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला, मराठी आदि भाषाओं के साहित्य का अनुवाद कर हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान की। भारतीय भाषाओं के बीच वैचारिक आदान–प्रदान के मार्ग भी अनुवाद ने खोले, जिससे हिंदी साहित्य का संवर्धन हुआ और देश को एकसूत्र में बाँधने के प्रयास को बल मिला। इस राष्ट्रीय और सांस्कृतिक नवजागरण में अनुवाद ने युगांतरकारी कार्य किया है। संस्कृत के नाटकों का अनुवाद राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने के

लिए किया गया था, शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद मानव को विभिन्न रूढ़ियों से मुक्त करने के लिए किया गया था। रामचंद्र शुक्ल ने धर्मांधता, आध्यात्मिक जड़ता, कठमुल्लापन आदि बुराइयों का पर्दाफाश करने के लिए हैकल की क्रांतिकारी कृति "रिटल आफ यूनिवर्स का "विश्व प्रपंच' नाम से अनुवाद कर नए ज्ञान–विज्ञान का परिचय दिया। इस प्रकार भारत में जो प्रौद्योगिकीपरक तथा सांस्कृतिक क्रांति का प्रादुर्भाव हुआ है, वह सब अनुवाद से ही संभव हो पाया है। इस दृष्टि से अब अनुवाद दूसरे दर्जे का विषय या कार्यक्षेत्र नहीं रहा। वास्तव में जिस विषय या कार्यक्षेत्र से विश्व की एकता का विकास हो, विश्व में परस्पर संपर्क स्थापित करने की क्षमता हो, राष्ट्र को एकसूत्र में बाँधने की शक्ति हो और विभिन्न समुदायों को एक–दूसरे को समझने तथा उनमें समभाव लाने का भाव हो, उसकी प्रासंगिकता और महत्ता तो बनी ही रहेगी और उसे दूसरा दर्जा देना उस विषय के साथ अन्याय करना है।

रोजगार में अनुवाद –

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में समूचा विश्व एक ग्राम के रूप में उभरकर आ रहा है। इस सीमित दायरे में सिमटते विश्व में भाषा का संदर्भ आज उपभोक्ता सापेक्ष होता जा रहा है और अपने बाज़ार तंत्र को फैलाता जा रहा है। भूमंडलीकरण और उदारीकरण से चलने वाले बाज़ार तंत्र को स्थापित करने के लिए मुक्त बाजार, निजीकरण और मीडिया का सहारा लिया जा रहा है। इसके लिए उत्पादक को स्थानीय भाषा का जो प्रयोग करना होता है, उसके लिए अनुवाद का आधार लिया जाता है। इस दृष्टि से भूमंडलीकरण के दौर में बाज़ारवाद की विशेष भूमिका है, जो आज के व्यावसायिक विश्व में अपना स्थान बना रहा है। इस दौड़ में स्वयं को स्थापित करने में अनुवाद एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में सामने आया है। बाज़ारवाद से तेज़ी से पनप रही व्यावसायिकता में अनुवाद आदान–प्रदान का स्रोत बनता जा रहा है, क्योंकि

व्यवसाय की सफलता असफलता भाषा पर ही आधारित है और इसी में अनुवाद की अनिवार्यता को स्वीकार करना पड़ता है।

इसी संदर्भ में अनुवाद के क्षेत्र में उभर रही संभावनाओं और रोजगार के नए आयामों पर विचार करने की आवश्यकता है। आज वाणिज्य, शिक्षा, पर्यटन, जनसंचार प्रशासन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोजनमूलक उद्देश्यों के कारण अनुवाद के क्षेत्र में वृद्धि हो गई है। इन नई संभावनाओं के कारण अनुवाद का संबंध अब "स्वांतः सुखाय तक सीमित न रहकर प्रयोजनमूलक आयामों के साथ जुड़ गया है। इसीलिए अनुवाद रोजगार का माध्यम भी बन गया है।

आधुनिक युग में अनुवाद का क्षेत्र बड़ा व्यापक हो गया है। यह मानव जीवन के उन क्षेत्रों में प्रविष्ट हो गया है जो जन सामान्य के दैनंदिन के कामकाज में प्रयुक्त होते हैं। इसी कारण अनुवादकों की माँग बढ़ी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में द्विभाषिकता की स्थिति अंग्रेजी–हिंदी की रही है, जिसमें सरकारी कामकाज में अनुवादकों की माँग पैदा हुई है। प्रशासन, बैंक और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, पर्यटन, तकनीकी क्षेत्र, जनसंचार और पत्रकारिता, विज्ञापन, फिल्म उद्योग आदि विविध क्षेत्र तथा देशी और विदेशी संस्थाओं में अनुवाद संबंधी रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए हैं। इन सब में अनुवाद का विशेष महत्व है। इनमें से कुछ आयामों का विवेचन किया जा रहा है।

प्रशासन : प्रशासन के क्षेत्र में अनुवाद की विशिष्ट भूमिका है। भारत के अनुच्छेद 343 में हिंदी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। राजभाषा विधेयक 1963 और राजभाषा विधेयक (संशोधन) 1967 के अनुसार हिंदी और अंग्रेजी में सरकारी कामकाज की व्यवस्था है। इसलिए प्रशासनिक स्तर पर भारत में द्विभाषिक स्थिति बनी हुई है। इसलिए भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों, संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, निगमों, कंपनियों आदि में अनुवाद की व्यवस्था की गई है। हिंदी भाषी राज्यों के साथ राजकाज के स्तर पर

हिंदी में तथा हिंदीतर भाषी राज्यों के साथ अंग्रेजी अथवा हिंदी या दोनों में सरकारी पत्राचार की व्यवस्था है। इसी प्रकार बैंकों में अंग्रेजी–हिंदी तथा हिंदी–अंग्रेजी के अनुवाद का भी प्रबंध है। इन सबकी पूर्ति के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की गई है।

शिक्षा : शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का विशेष योगदान है। देश–विदेश के विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों में अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, विज्ञान आदि विभिन्न विषयों का अध्ययन–अध्यापन होता है। इन विषयों के मौलिक ग्रंथ अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, चीनी, जापानी आदि अनेक भाषाओं में प्रकाशित हैं। इनमें से श्रेष्ठ ग्रंथों का अनुवाद भी उपलब्ध है। भारत में अनेक हिंदी ग्रंथ अकादमियाँ इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रही हैं।

साहित्य : साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व सर्वविदित है। आज अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फ़ारसी आदि में रचित श्रेष्ठ साहित्य अनुवाद के माध्यम से ही विभिन्न भाषा–भाषियों के समक्ष पहुँचा है। रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित 'गीतांजलि' काव्य अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से ही विश्व विख्यात हुआ और उन्हें नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। शेक्सपीयर टालस्टाय गोर्की, उमर ख्याम, कालिदास आदि अनेक सुप्रसिद्ध साहित्यकारों का साहित्य विश्व के समक्ष अनुवाद के द्वारा ही आया है। तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के लिए अनुवाद उपयोगी सिद्ध हुआ है। इस दिशा में भारत में साहित्य अकादमी और नेशनल बुक ट्रस्ट के कार्य प्रशंसनीय हैं। भारतीय भाषाओं के बीच साहित्यिक अनुवाद का महत्व और जरूरत हम सभी महसूस करते हैं।

जनसंचार और पत्रकारिता : जनसंचार के मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में अनुवाद की उपयोगिता में वृद्धि हुई है। समाचार–पत्र, रेडियो, दूरदर्शन आदि में विज्ञापन, बाज़ार भाव, खेलकूद संबंधी समाचार, संपादकीय, फिल्म समीक्षा, देश–विदेश के समाचार आदि का अनुवाद अनेक भाषाओं में होता है। समाचारों का अनुवाद न केवल समाचार पत्रों में होता है, बल्कि संवाद समितियों में भी होता

है। भारत में ये संवाद समितियाँ समाचारों का अनुवाद हिंदी में या तो स्वयं करती हैं या अंग्रेजी में समाचार संगृहीत कर और उनका संपादन कर सीधे ही समाचारपत्र संस्थाओं अथवा चैनलों को उनके अनुवाद और प्रकाशन या प्रसारण की व्यवस्था के लिए भेजती हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विकास और विस्तार के साथ ही केबल ऑपरेशन का जो सिलसिला चला है, उसमें भी अनुवाद को गति प्राप्त हुई है। "डिस्कवरी "स्टार मूवीज़ आदि चैनलों के अनेक कार्यक्रम हिंदी अनुवाद या उनके उप–शीर्षकों (captions) के साथ दिखाए जाते हैं।

वाणिज्य और व्यापार : वाणिज्य और व्यापार के विकास में अनुवाद की उपयोगिता में भी संवर्धन हुआ। वाणिज्य साहित्य के अंतर्गत, वाणिज्य, व्यापार बीमा, बैंक, क्रय–विक्रय मानव संसाधन अथवा प्रशासन, लेखा आदि कारोबार के अनेक क्षेत्र हैं। इसलिए विपणन (डंतामजपदह), शेयर, निवेश, लेनदार और देनदारों की बातचीत, दलालों से पत्र–व्यवहार, उद्योगों और कारखानों के निर्माताओं से पत्र–व्यवहार, प्रशासनिक पत्र व्यवहार आदि वाणिज्य और व्यापार के अंग हैं। इसी रख–रखाव में प्रपत्र, आय– व्यय, सावधि जमा, लाभांश आदि का भी कार्य होता है। इन्हीं के अनुरूप इनकी शब्दावली और संरचना होती है। इसलिए इस अनुवाद में इनकी विषय–वस्तु और प्रकृति अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती है।

वाणिज्यिक साहित्य में विज्ञापन का अपना महत्व है। उत्पादों का प्रचार–प्रसार बड़े ही सरल, सुबोध और रोचक ढंग से किया जाता है। इसमें अनुवादक को सर्जक के रूप में कार्य करना होता है। इसलिए विज्ञापन के क्षेत्र में अनुवाद एक जटिल कार्य है, किंतु इसके आयाम अनेक हैं। विज्ञापन के क्षेत्र में अनुवाद की विशिष्ट भूमिका है और आज लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद की उपयोगिता बढ़ी है।

पर्यटनः आज पर्यटन के क्षेत्र मे अनुवाद की असीम संभावनाएँ हैं। वास्तव में पर्यटन से मनुष्य को रोजमर्रा की भागदौड़ के जीवन से विश्राम मिलता है। पर्यटन का विकास धर्म, संस्कृति, स्थापत्य, कला, खेलकूद आदि विभिन्न क्षेत्रों के माध्यम

से हो सकता है। देश–विदेश की यात्रा में "तीर्थाटन और वाणिज्यिक व्यापारिक आयामों को जहाँ महत्व मिलता है वहाँ यह ज्ञानार्जन का माध्यम भी है। पर्यटन आज उद्योग बन गया है, जिसमें विश्व के अनेक देशों की अर्थव्यवस्था जुड़ी हुई है और ये देश पर्यटन स्थल के रूप में परिणत हो रहे हैं। इस उद्योग में विज्ञापन, जनसंपर्क और विक्रय प्रचार के विकास से रोज़गार की असंख्य संभावनाएँ पैदा हो गई हैं। पर्यटकों के लिए ट्रेवल एजेंसी अथवा टूर ऑपरेटर होते हैं। विदेश यात्रा के लिए वीज़ा के लिए दूतावासों से संपर्क रखना पड़ता है। टिकट, होटल आदि के आरक्षण की भी व्यवस्था करनी होती है। इसके अतिरिक्त समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा आदि के माध्यम से विज्ञापन, पोस्टर, होर्डिंग, स्लाइड आदि प्रकाशित किए जाते हैं। इसमें विभिन्न देशी और विदेशी भाषाओं के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। अतः इन सभी कार्यों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होते हैं और उसमें अनुवादक और आशु अनुवादक के लिए कई संभावनाएँ रहती है। इस प्रकार पर्यटन में रोजगार संबंधी नई संभावनाओं से अनुवाद को विशिष्ट आयाम मिला है।

इस प्रकार अनुवाद का क्षेत्र लगातार व्यापक और विस्तृत होता जा रहा है। प्रौद्योगिकी के इस युग में कथ्य को द्रुतगति से एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण करने की होड़–सी लग गई है। जापान, चीन, रूस, जर्मनी आदि देशों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विषयक समूचा अनुसंधान प्रायः इन देशों में अपनी भाषा में होता है। इसलिए अन्य देशों के वैज्ञानिक या शोधकर्ता जब इन देशों के शोध कार्यों का अध्ययन करते हैं तो उन्हें अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। अतः वह दिन दूर नहीं जब हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में श काही वर्चस्व रहेगा।

सारांश

भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है। भाषाओं की बहुलता हमारे राष्ट्र की विशेषता है क्योंकि शताब्दियों के सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया में भारत भाषायी और सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से एकीकरण की ओर बढ़ा है।

तथाकथित विभिन्न भाषा–परिवारों की भाषाएँ बोलने वालों में परस्पर समरसता बनी रही है। इस समरसता के पीछे अनुवाद की विशेष भूमिका रही है। अनुवाद के माध्यम से भारतीय भाषाओं की भाषिक और सांस्कृतिक समानता के दर्शन हुए हैं और भारत की अखंडता तथा एकीकरण की भावना पैदा हुई। इसलिए भारत में अनुवाद एक बहुप्रयोजनी और बहुआयामी बन कर एक सामाजिक आवश्यकता के रूप में उभरकर आया।

भारत जैसे विशाल देश में भारतीय भाषाओं के बीच आदान–प्रदान में सुविधा प्राप्त होगी तो रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे। भारतीय भाषाओं के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में जो कार्य हो रहे हैं, उससे अनुवाद की कई संभावनाएँ पैदा होंगी और रोजगार के नए आयाम उभर का आ रहे हैं। प्रशासन, शिक्षा, वाणिज्य–व्यापार यात्रा और पर्यटन ऐसे नए आयाम हैं जिससे अनुवाद का क्षेत्र व्यापक और विशाल होगा। अनुवाद भारत का एक सूत्र में बाँधने के लिए न केवल माध्यम या सहायक होगा वरन एक शक्तिशाली सेतु होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के समान तत्व, कैलाश चंद्र भाटिया, (1995), हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1995.
- अनुवाद विज्ञान की भूमिका, कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.
- अनुवाद की सामाजिक भूमिका, रीतारानी पालीवाल, हिंदी बुक सेंटर, 2003.
- दि प्रॉब्लम्स ऑफ ट्रांसलेशन, जी. गोपीनाथन और एस. कुंडुस्वामी (संपा), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993.